NATIONAL CONFERENCE

VEDIC VANGMAY ME NARI VIMARSH

to be held

AT

PG MAHILA MAHA VIDYALAYA, Jodhpur

On 7th to 9th december 2012

Research Paper Submitted By – **Jitendra Vyas** (Scholar - ASTROLOGY), Deptt. Of **Sanskrit**, Jai Narain Vyas University,
Jodhpur, (Rajasthan)

www.drjitendraastro.com

Subject of

VEDANGA ASTROLOGY

Research Topic - ***वेदांग ज्योतिष में स्त्री जातक के व्यावहारिक व सांसारिक भोग विमर्श***

–: वेदांग ज्योतिष में स्त्री जातक के व्यावहारिक व सांसारिक भोग विमर्श :–

आज के युग में स्त्री विमर्श अनेक सांसारिक श्रेणियों में हो रहा है। परन्तु इसकी जननी अर्थात् विचार-विमर्श का प्रादुर्भाव व अन्त की प्रासंगिकता बिना वेदांग ज्योतिष के नहीं हो सकती है। स्त्री जीवन का महत्व वैदिक वाड.मय में सर्वोपरि रखा गया है। अतः उनके जीवन के सभी भोगों की चर्चा ज्योतिष के आधारभूत रूप से की की गयी है। उनका शरीर, व्यवहार, पति, सुख-दुख, संतान, विवाह, रोग, स्त्री का प्रव्रज्या योग और भी अनेकानेक योग पूर्वाचार्यो ने वैदिक साहित्यों में व्यावहारिक व पूर्ण समीकरणों से समझाये है। यद्यपि जो योग व प्रभावादि पुरूषों में सन्दर्भ में बताए गए है। वे सब स्त्रियों के विषय में भी समझे जाते है।

यत्पुंजातकोक्तं तत्सर्व स्त्रीणामपि।।[1]

लेकिन फिर भी स्त्री कुण्डली का स्वरूप भिन्न होता है तथा उनकी कुण्डली में **"लग्न चन्द्रतः शरीर।।"**[2] लग्न व चन्द्रमा से उनके शरीर का विचार करना चाहिए। जो फल पुरूष जातकोक्त पद्धति से स्त्रियों में असम्भव होता है उसको पति के संदर्भ में समझना चाहिए।

यथा- "स्त्रीणां सम्भवं पतिषु।।"[3]

स्त्री की कुण्डली निम्न प्रकार में समीकरणों पर विचार किया जाता है-[4]

1. तेज, यश, शरीर व सम्पति का विचार लग्न से किया जाता है।
2. पुत्र व आय वृद्धि के लिए स्त्री की कुण्डली में नवम भाव का विचार किया जाता है।
3. सप्तम भाव से पति सुख, अष्टम भाव से सघवात्व व विघवात्व का विचार करना चाहिए।
4. नवम से प्रवज्या (सन्यासी)
5. पंचम व सप्तम से प्रेम प्रसंग
6. दशम, एकादश व द्वितीय से ससुराल व कुटुम्ब सुख का विचार।

ऋषि भर्तहरि ने भी स्त्री विमर्श की ज्योतिषीय व्याख्या दी है उन्होंने कहा है कि सुन्दरियों में बृहस्पति, सूर्य, चन्द्रमा व शनि ग्रह का अद्‌भुत संगम बताया है। ज्योतिष के अनुसार गुरु आकर्षण का, सूर्य कान्ति का, चन्द्रमा सौन्दर्य और कामना का एवं शनि आक्रामक भाव का ग्रह है। अतः ऋषि कहते है कठोर स्तनों के भार में 'गुरु', मुख में 'चन्द्रमा' एवं 'सूर्य' और पैरों में शनिश्चर (शनि ग्रह मन्द गति से चलना) के कारण सुन्दरियॉ इन ग्रहों का योग ही लगती है। **यथा-**

गुरुणा स्तन-भारे मुखचन्द्रेण भास्वता
शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेच्जे ग्रहमयीव सा।।[5]

ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श कई श्रैणियों पर आधारित है, जैसे- स्त्री का सुख व दुःख। यह परिस्थिति स्त्री के भोग को ही परिभाषित करती है। वैदिक वाड.मय में स्त्री का विमर्श विवाहोत्तर ही किया जाता है। अतः कुछ वेदांग ज्योतिषीय समीकरण भी इस धारा पर विशेष प्रभाव डालती है जो इस प्रकार है -

www.drjitendraastro.com

(i) **स्त्री का सुख व दुःख विचार :-** स्त्री की कुण्डली में यदि लग्न में बुध व चन्द्रमा दोनों स्थित हो तो स्त्री कला मर्मज्ञ, गुणवत्ती व सुखी होती है।[6] यदि लग्न में बुध व शुक्र स्थित हो तो वह दर्शनीय रूप वाली, पति की प्रियतमा व कलानिपुण होती है।[7] यदि सप्तम स्थान में एक, दो या तीन शुभ-ग्रह हो तो स्त्री क्रमशः पति की प्यारी, श्रेष्ठ और रानी होती है **यथा-**

एकस्मिन् द्वयोस्त्रिषु सौम्येषु सप्तमे पतिप्रिया प्रवराज्ञी।।[8]

इस सन्दर्भ में कुछ विशेष फल बताया जा रहा है-[9]

- जन्म लग्न में चन्द्रमा व शुक्र हो तो स्त्री क्रोधिनी परन्तु सुखी होती है।
- चन्द्रमा लग्न में बैठकर स्त्री को पति की प्यारी बनाता है।
- यदि लग्न में बुध, गुरु, शुक्र हो तो कन्या रूप गुणयुक्त व प्रसिद्ध होती है।

यदि स्त्री की कुण्डली में **"सुर्यअष्टमे सन्तापयुक्ता"**[10] अष्टम में सूर्य स्थित हो तो स्त्री सदा सन्तप्त अर्थात् उद्विग्न स्वभाव वाली, सदा परेशान रहने वाली होती है। स्त्री की कुण्डली में शनि यदि मध्यवली हो और सब पुरूष ग्रह सूर्य, मंगल, बृहस्पति बलवान हो और शेष ग्रह बुध, चन्द्र व शुक्र निर्बल हो और पुरूष लग्न अर्थात् विषमराशि में जन्म हो तो स्त्री पुरूष के समान धृष्ट स्वभाव वाली होती है अर्थात् पुरुष की तरह शुरता, अल्पलज्जता व स्त्रियोचित हाव-भावों से रहित होकर दुःखी होती है। **यथा -**

मन्दे मध्यबले नृग्रहेषु सबलेषु शेषेषु निर्बलेषु पुलग्नजा पुवंद्धृष्टा।।[11]

(ii) **पति विचार व पति स्वभाव :** स्त्री की कुण्डली में यदि सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह न हो और सप्तम बल से रहित हो और उसे शुभ ग्रह न देखते हो तो स्त्री का पति अच्छा नहीं होता अर्थात् सप्तम स्थान का बल रहित, ग्रह शून्य, पाप दृष्ट होना स्त्री के पति के बुरे होने को इंगित करता है **यथा-**

सप्तमे ग्रहा भावेअबलेसौम्यादृष्टे कुभर्तृका।।[12]

जिस स्त्री की कुण्डली में बुध व शनि दोनों ही सप्तम में स्थित हो उसका पति नपुंसक होता है। यदि लग्न में चर राशि हो तो स्त्री का परदेश में रहने वाला होता है।[13]

"सूर्यर्क्षांअशे द्यूने पतिर्मन्दरतिः" स्त्री की कुण्डली में सप्तम स्थान में सूर्य राशि या नवांश हो तो पति अल्प रति वाला अर्थात् कम कामुक होता है। यदि वहां **"चन्द्रर्क्षांशेअस्ते मृदुः कामी पतिः"** पर चन्द्रमा की राशि या नवांश हो तो पति कोमल स्वभाव वाला व कामुक होता है।[14]

यदि सप्तम स्थान में मंगल की राशि या नवांश हो तो स्त्री का पति प्यारा परन्तु क्रोधी होता है। यदि सप्तम स्थान में बुध की राशि या नवांश हो तो स्त्री का पति विद्वान् होता है।[15] यदि सप्तम स्थान में बृहस्पति की राशि या नवांश हो तो पति गुणवान व जितेन्द्रिय होता है। यथा -

www.drjitendraastro.com

जीव भांशेअस्ते गुणी जितेन्द्रियः पतिः।।[16]

यदि सप्तम स्थान में शुक्र की राशि या नवांश हो तो पति सुन्दर व भाग्यशाली होता है और सप्तम स्थान में शनि की राशि हो तो पति मूर्ख और बूढ़ा होता है।[17]

(iii) स्त्री के परित्यकता योग, अविवाहित, पुर्नविवाह व परगमन योग-

स्त्री के कुण्डली में निर्बल पाप ग्रह सप्तम में हो और शुभ ग्रह उसे देखते हो तो स्त्री को पति त्याग देता है। स्त्री की जन्म कुण्डली में सप्तम स्थान में यदि सूर्य स्थित हो तो पति ऐसी स्त्री को त्याग देता है।[18] यदि सप्तम स्थान में शनि हो और उसे कई पापग्रह देखते हो तो ऐसी स्त्री का विवाह नहीं होता है। **यथा-**

मन्दे मन्दे पापैर्दृष्टे अविवाहः।।[19]

यदि सप्तम स्थान में स्त्री की कुण्डली में शुभ व अशुभ मिश्रत ग्रह हो तो वह पुनः विवाह करती है। **यथा - मिश्राः सप्तमे पुनर्भूः।।**[20]

मंगल व शुक्र दोनों एक-दूसरे के नवांश में स्थित हो तो स्त्री दूसरे पुरूष में आसक्त रहती है। चन्द्रमा, मंगल व शुक्र ये तीनों सप्तम स्थान में हो अथवा सूर्य व चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो स्त्री अपने पति की इच्छा से ही परपुरुष में आसक्त रहती है।[21] लग्न, चतुर्थ, अष्टम, द्वादश, सप्तम इन स्थानों में से किसी एक स्थान पर मंगल पापग्रह हो तो स्त्री को पति त्याग देता है और तब व परपुरूषगामिनी हो जाती है। **यथा-**

लग्नतुर्याष्टमान्त्यमदान्यतमे सपापारे पतित्यागात्परासकता।।[22]

(iv) **सन्तान विचार व वन्ध्या योग** - स्त्री की कुण्डली में यदि चन्द्रमा वृष, कन्या, वृश्चिक या सिंह राशि में स्थित हो तो स्त्री के कम पुत्र होते है। यदि अष्टम स्थान में बृहस्पति या शुक्र स्त्री की कुण्डली में पड़े हो तो स्त्री का गर्भपात होता है या सन्तान मरी हुई पैदा होती है **यथा -**

गो कन्या लिसिहेष्विदाववल्पपुत्रा।।
अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।[23]

स्त्री की कुण्डली में यदि अष्टम स्थान में बुध स्थित हो तो स्त्री काकवन्ध्या होती है अर्थात् एक बार ही गर्भ धारण कर पाती है। केवल एक बार सफल या असफल गर्भ धारण करने वाली स्त्री काकवन्ध्या कहलाती है। शनि व सूर्य अष्टम स्थान में स्थित हो तो स्त्री बाँझ होती है- **यथा-**

ज्ञेअष्टमे काकवन्ध्या।।
मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या।।[24]

(v) **स्त्री प्रवज्या, स्त्री विधवा व कुल नाशिनी योग** - यदि स्त्री की कुण्डली में सप्तम स्थान में क्रूर ग्रह हो और नवम में शुभ ग्रह हो तो नवमगत ग्रह के शील के अनुसार स्त्री सन्यास ले लेती

www.drjitendraastro.com

है। यदि बुध, मंगल, बृहस्पति व शुक्र बलवान हो और स्त्री राशि अर्थात् सम राशि लग्न में जन्म हो तो स्त्री विख्यात और ब्रह्मलीन होती है।[25] अष्टम स्थान में पापग्रह स्थित हो तो अष्टमेश के अधिष्ठित नवांशाधिष ग्रह की दशा में पति की मृत्यु हो जाती है। राहु यदि मंगल की राशि में सप्तम, अष्टम या द्वादश स्थान में स्थित हो तो स्त्री विधवा हो जाती है। लग्न या चन्द्रमा से सप्तम या अष्टम में पापग्रह हो तो स्त्री विधवा हो जाती है। यदि स्त्री कुण्डली में अष्टम स्थान का स्वामी सप्तम स्थान में हो और सप्तमेश को पापग्रह देखते हो तो नवविवाहित भी विधवा हो जाती है। षष्ठ व अष्टम स्थान के स्वामी ग्रह यदि षष्ठ या व्यय स्थान में पापग्रहों के साथ बैठे हो तो भी विवाह के तुरन्त बाद ही स्त्री विधवा हो जाती है।[26] कुल नाशिनी की चर्चा इस प्रकार की गई है कि **"कुजेअष्टमे कुलटा"**[27] यदि जन्म चक्र में मंगल अष्टम में हो तो स्त्री दुश्चरित्रा (कुलटा) होती है। स्त्री जन्म चक्र में यदि लग्न व चन्द्रमा दोनों ही पापग्रहों के मध्य में हो अर्थात् इनके द्वितीय व द्वादश स्थानों में पाप ग्रह स्थित तथा शुभ ग्रह लग्न व चन्द्रमा को न देखते हो तो स्त्री दोनों कुलों अर्थात् पितृ कुल व पतिकुल को नष्ट कर देती है। यदि अष्टम राहु हो तो भी स्त्री कुल धर्म अर्थात् कुलाचार नष्ट कर देती है। **यथा –**

लग्नेन्दू पापान्तरगो सौम्यादृष्टौ कुलद्वहनी।।[28]

रन्ध्रे राहौ कुलधर्महनी।।[29]

इन उपरोक्त महत्वपूर्ण योग समीकरणों से स्त्री का ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में भोगों का विचार विमर्श किया जा सकता है।

www.drjitendraastro.com

सन्दर्भ

1. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 1/ पृष्ठ 322
2. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 3/ पृष्ठ 322
3. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 2/ पृष्ठ 322
4. जातक तत्वम्/ अध्याय4/ पृष्ठ 323
5. भर्तहरि शतक/ श्रृंगार शतक/ श्लोक 16/ पृष्ठ 13-14
6. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 6/ पृष्ठ 332
7. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 7/ पृष्ठ 332
8. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 8/ पृष्ठ 332
9. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ पृष्ठ 333
10. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 57/ पृष्ठ 334
11. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 55/ पृष्ठ 334
12. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 15/ पृष्ठ 327
13. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 16-17/ पृष्ठ 327
14. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 37-38/ पृष्ठ 331
15. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 39-40/ पृष्ठ 331
16. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 41/ पृष्ठ 331
17. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 42-43/ पृष्ठ 331
18. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 20/ पृष्ठ 328
19. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 21/ पृष्ठ 328
20. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 22-23/ पृष्ठ 329
21. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 26/ पृष्ठ 329
22. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 18-19/ पृष्ठ 328
23. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 52-54/ पृष्ठ 334
24. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 61-62/ पृष्ठ 335
25. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 50-51/ पृष्ठ 333
26. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 28-30, 33-34/ पृष्ठ 330
27. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 60/ पृष्ठ 335
28. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 58/ पृष्ठ 325
29. जातक तत्वम्/ अध्याय 4/ श्लोक 59/ पृष्ठ 335

www.drjitendraastro.com